सामान्य आधारिक विषय- कक्षा-11 (व्यावसायिक वर्ग)

(पर्यावरणीय शिक्षा एवं ग्रामीण विकास)

(कक्षा–11)

कोविड–19 महामारी के कारण शैक्षिक सत्र–2021–22 में विद्यालयों में समय से पठन–पाठन का कार्य न हो पाने की स्थिति में सम्यक विचारोपरान्त विषय विशेषज्ञों की समिति द्वारा निम्नवत् 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किये जाने की अनुशंसा की गयी है:–

खण्ड-क

(1) पर्यावरणीय शिक्षा-

(5) भूमि प्रयोग, मृदा अवक्रमण, जनसंख्या दबाव और वनों की क्षीणता, घास के मैदान एवं फसल के खेत।

(6) जलवायु और मृदा का पर्यावरणीय प्रदूषण और जीवित संसार पर इसके प्रभाव।

(7) खतरनाक औद्योगिक एवं कृषि उत्पाद-

7.1-उनके प्रयोग से सम्बन्धित सुरक्षा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धित आपदायें।

7.2-प्रयोग करने का पर्यावरण पर प्रभाव।

(9) सामग्रियों के गुण (जैव अवक्रमण और अवक्रमण रहित)।

खण्ड-ख

5-उद्यमिता अभिप्रेरणा-

1-स्वयं के बारे में आंकड़े एकत्रित करना।

2-उद्यमिता के व्यवस्था एवं अभिप्रेरणा के ढंग/तरीकों से परिचित कराना।

(1) उद्यमिता सम्बन्धी कौशल एवं व्यवहार का प्रत्यावाद/ज्ञान देना।

3-जोखिम उठाने की क्षमता, सफलता की आशा एवं असफलता का भय।

(1) पश्च-पोषण से सीखना।

4-समझाने की अभिप्रेरणा शक्ति, उपलब्धि, कल्पनायें, अभिप्रेरणा की प्रगाढ़ता, उपलब्धि, भाषा आदि।

5-व्यक्तिगत कार्यक्षमता-

(1) व्यक्तिगत जीवन का लक्ष्य।

(2) उद्यमिता से इसका सम्बन्ध।

(3) नियंत्रण के स्थान (बिन्दु)।

6-उद्यमिता के मूल्यों पर प्रत्यावाद करना (का ज्ञान देना)।

7-उपलब्धि योजना।

8-कार्य क्षमता पर प्रभाव।

9-उद्यमिता सम्बन्धी लक्ष्यों को निर्धारित करना-

(1) उद्यमिता के उद्देश्य की सहभागिता।

(2) उद्यमिता स्थापित करने हेतु उचित तरीकों का विकास।

(3) कठिनाइयों का सामना करना।

(4) सहायता प्राप्त करने की क्षमता में पुनर्बलन का विकास।

10-सृजनात्मकता।

11-समस्याओं का सामना करने की योग्यता को समझना एवं व्यवहार में लाना।

6-उद्यम चलाने की क्षमता-

1-परियोजना का निर्धारण-

1.1-बड़े पैमाने के उद्योग, मध्यमवर्गीय पैमाने के उद्योग एवं छोटे पैमाने के लिये उद्योग, लघु क्षेत्र, कुटीर उद्योग एवं ग्रामीण उद्योग की परिभाषायें।

1.2-परियोजनाओं का वर्गीकरण, निर्माण, कार्य सेवा, व्यापार करना, उपभोक्ता वस्तुयें, पूंजीगत वस्तु, सहायक वस्तु, प्रत्येक प्रकार के कार्यों का क्षेत्र एवं उनकी विशेषतायें।

2-केन्द्रीय एवं राज्य सरकार की नीतियां, एस0 एस0 आई0 लघु क्षेत्र और नये उद्यमों के लिये कार्यक्रम एवं प्रोत्साहन।

3-उद्योग धन्धे स्थापित करने के चरण।

4-वर्तमान एवं भावी उद्योग धन्धों की सहायता प्रदान करने वाली संस्थाओं के सम्बन्ध में जानकारी-

4.1-डी0 आई0 सी0।

4.2-उद्योग निदेशालय।

4.3-तकनीकी सलाहकारों का संगठन।

4.4-एस0 एफ0 सी0।

4.5-एस0 एस0 आई0 डी0 सी0।

4.6-आई0 डी0 सी0।

4.7-एस0 एस0 आई0 सी0।
4.8-एस0 आई0 एस0 आई0।
4.9-व्यापारी बैंक।
4.10-सहकारी बैंक।
4.11-के0 बी0 आई0 सी0 इत्यादि।

5-एस0 एस0 आई0 के क्षेत्र में अनन्य उत्पादन हेतु उत्पादित वस्तुओं का आरक्षण।
विद्यार्थियों को उत्पादित वस्तुओं की सूची बांट देनी चाहिये।

उपर्युक्त के अनुक्रम में 70 प्रतिशत का पाठ्यक्रम निम्नवत् है–

खण्ड-क (50 अंक)

(पर्यावरणीय शिक्षा एवं ग्रामीण विकास)

(1) पर्यावरणीय शिक्षा-

(1) पर्यावरणीय संसाधन (शक्ति/ऊर्जा, वायु, जल, मिट्टी, खनिज, पौध तथा जन्तु) निहित क्षमता, सन्दोहन के प्रभाव। 10 अंक

(2) संसाधनों और संख्या के मध्य जनसंख्या विस्फोट और असामंजस्य, आधारभूत मानव आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षा उद्देश्यों की अभिलाषा को प्राप्त करने हेतु पर्यावरण की मांग और पर्यावरण पर इसका प्रभाव। 10 अंक

(3) औद्योगीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव- 10 अंक
(क) प्राकृतिक दृश्य का अनुत्क्रमणीय परिवर्तन।
(ख) पर्यावरण का अतिक्रमण/अवक्रमण और इनके प्रभाव।

(4) आधुनिक कृषि का पर्यावरण पर प्रभाव- 04 अंक
क-अधिक उपज प्रदान करने वाली किस्मों का प्रयोग एवं अनुवांशिक स्रोतों से वंचित करना।
ख-नहर द्वारा सिंचाई और जलाक्रांति (वाटर लागिंग)।
ग-उर्वरकों एवं कीटनाशकों का प्रयोग और पर्यावरण पर इसके प्रभाव।
घ-कीटनाशकों के उत्पादन, भण्डारण, प्रेषण एवं निस्तारण में जोखिम उठाना।

(8) चिकित्सीय तकनीकी का दुरुपयोग एवं दवाओं के दुरुपयोग। 06 अंक

(2) ग्रामीण विकास-

(1) भारतवर्ष में भूमि उपयोग के पार्श्वदृश्य (चित्रण)। 2 अंक
(2) आर्थिक पिछड़ेपन के कारण, गरीबी ग्रस्त क्षेत्र। 2 अंक
(3) निवेशों (इनपुट) को सुधार कर कृषि उत्पादकता बढ़ाने के उपाय। 2 अंक
(4) वनारोपण-वन लगाना, सामाजिक एवं फार्म वानकी पर्यावरणीय सामाजिक और आर्थिक वृद्धि। 2 अंक
(5) ग्रामीण कूड़े-कचरे का पुनः उपयोग जैसे गोबर गैस संयंत्र, कम्पोस्ट खाद का निर्माण। 2 अंक

खण्ड-ख (50 अंक)

उद्यमिता विकास

1-व्यवसाय में उद्यमिता का बोध कराना- 8 अंक

1-व्यवसाय (कैरियर कन्वास) सम्बन्धी सामान्य चर्चा, उसके विद्यालय एवं चुने हुये व्यवसाय की अनिवार्यता।
2-व्यावसायिक धारा के अन्तर्गत वैकल्पिक जीविकोपार्जन के साधन तथा वेतनभोगी एवं स्व रोजगार।
3-उद्यमिता की गतिशीलता-
(1) व्यवसाय में उद्यम का महत्व एवं उपादेयता।
(2) उद्यमिता की विशेषतायें/महत्व/कार्य एवं प्रतिफल (पुरस्कार)।
(4) भारतीय संस्कृति में उद्यमिता, भारतीय संस्कृति का स्वरूप-
(1) उद्यमिता का महत्व तथा स्वरूप, भारतीय संस्कृति में उद्यमिता का महत्व तथा स्वरूप।
(2) उत्पाद तथा उपयोगी अवधारणा।
(3) सादा जीवन एवं उच्च विचार तद्नुसार आचरण।

2-उद्यमिता के मूल्य- 4 अंक

(1) मूल्य एवं मानव व्यवहार से सम्बन्धित मूल्यों का बोध कराना।
(2) उद्यमिता में मूल्यों का बोध-
(1) नवीन स्थिति।
(2) स्वतंत्रता।
(3) समुन्नत प्रदर्शन।
(4) कार्य के प्रति निष्ठा।
(3) उद्यमिता सम्बन्धी मूल्यों के क्रिया-कलापों को परिचित कराना।

3-विभिन्न प्रकार के उद्यमिता सम्बन्धी प्रवृत्तियों की धारणायें एवं उनकी सार्थकता- **10 अंक**

1-कल्पना शक्ति/अन्तर्ज्ञान का प्रयोग।

2-सामान्य जोखिम उठाना।

3-अभिव्यक्ति एवं कार्य की स्वतंत्रता का लाभ उठाना।

4-आर्थिक अवसरों को खोजना।

5-सफलतापूर्वक पूरे किये गये कार्यों से संतुष्टि प्राप्त करना।

6-विश्वास करना कि ये पर्यावरण को परिवर्तित कर सकते हैं।

7-पहल करना।

8-स्थिति का विश्लेषण करना एवं कार्य योजना बनाना।

9-कार्य में लगे रहना।

10-क्रिया-कलाप।

4-**व्यावहारिक क्षमतायें-** **08 अंक**

1-नवीन स्थिति से अवगत होना एवं जोखिम उठाना।

2-संदिग्धताओं को सहने की क्षमता।

3-समस्या-समाधान।

4-लगनशीलता।

5-स्तर/कार्य प्रदर्शन की गुणवत्ता।

6-सूचनाओं को प्राप्त करना।

7-व्यवस्थित योजना।

8-क्रिया-कलाप।

7-विपणन (बाजार) की स्थिति का पता लगाना- **10 अंक**

1-विपणन (बाजार) की स्थिति ज्ञात करने की आवश्यकता एवं महत्व।

2-बाजार की स्थिति का पता लगाने के घटक एवं तकनीक-

2.1-उत्पाद की प्रकृति।

2.2-मांग विश्लेषण और उपभोक्ता की आवश्कयताओं का पता लगाना।

2.3-पूर्ति विश्लेषण और बाजार की स्थितियां।

2.4-विपणन का अभ्यास, भण्डारण वितरण पैकिंग, साख नीति प्रेषण, व्यक्तिगत विपणन कला का चयन करना।

3-बाजार को समझना, बाजार का विभक्तीकरण, उत्पाद विश्लेषण।

4-उत्पाद का चयन करना और चयनित उत्पाद हेतु बाजार का सर्वेक्षण करना।

8-परियोजना का चयन- **10 अंक**

1-परियोजना की पहचान के लिये पहचान हेतु विचार-विमर्श।

2-दिये गये विचारों के संक्षिप्तीकरण की प्रक्रिया।

3-उत्पादन के अन्तिम चुनाव के कारकों पर विचार करना, मांग प्रतियोगी उत्पादन के कारकों की उपलब्धियां, सरकारी नीति, सीमान्त लाभ इत्यादि।

4-क-शक्तियों, कमजोरियों, अवसरों एवं प्रशिक्षण का विश्लेषण-

4-क-1-शक्तियां और कमजोरियां।

4-क-2-व्यक्तिगत शक्तियों और कमजोरियों का मूल्यांकन।

4-क-3-मुद्रा।

4-क-4-बाजार।

4-क-5-तकनीकी ज्ञान की जानकारी।

4-ख-1-श्रम, सामग्री एवं क्षमतायें।

4-ख-2-अवसर एवं प्रशिक्षण।

4-ख-3-आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय पहलुओं की स्थिति के अध्ययन द्वारा प्रशिक्षण को पूर्ण करना एवं पर्यावरणीय छानबीन करना।